Paper - 2

Introduction

सृष्टिवाद और विकासवाद

सृष्टिवाद और विकासवाद दोनों सिद्धांत विश्व की उत्पत्ति के सम्बन्ध में दिये गए हैं। सृष्टिवाद के अनुसार विश्व की रचना ईश्वर द्वारा हुई है, अर्थात् विश्व अपरिवर्तनशील है। वहीं दूसरी ओर विकासवाद के अनुसार विश्व का वर्तमान रूप क्रमिक परिवर्तनों का फल है। यह परिवर्तन वास्तविक है, न कि मिथ्या।

विश्व विज्ञान (Cosmology) का मुख्य उद्देश्य मानव की विश्व-सम्बंधी जिज्ञासा को शांत करना है। देश और काल में स्थित सम्पूर्ण पदार्थों की समष्टि को ही विश्व कहते हैं। इनमें चार (4) प्रकार के पदार्थ पाये जाते हैं - जड़, जीव, चेतन और आत्मचेतन। विश्व के सभी पदार्थ परिवर्तनशील दिख पड़ते हैं। अतः विश्व संबंधी दो मुख्य प्रश्न उठते हैं —

(a) विश्व की उत्पत्ति कैसे हुयी है, और
(b) विश्व का स्वरूप जो आज है, वैसा आरम्भ से है या उसमें कुछ परिवर्तन हुआ है?

इस प्रकार से इन प्रश्नों के उत्तर स्वरूप इन दो सिद्धांतों सृष्टिवाद एवं विकासवाद का उदय हुआ। हम यहाँ पर सर्वप्रथम सृष्टिवाद को समझेंगे पुनः विकासवाद की चर्चा की जायेगी।

(1) सृष्टिवाद (Theory of Creation) :→

सृष्टिवाद के अनुसार ईश्वर ने विश्व की सृष्टि की और विश्व का जो स्वरूप आज है, वह आरम्भ से इसी प्रकार का ही है, अर्थात् विश्व अपरिवर्तनशील है। सृष्टिवाद के अनुसार विश्व अनादि नहीं कहा जा सकता, क्योंकि इसकी उत्पत्ति हुयी है तथा यह उत्पत्ति ईश्वर द्वारा हुयी है।

ईश्वर सर्वशक्ति सम्पन्न, सर्वज्ञ, सर्वांतर्यामी, असीम एवं अनंत है। सृष्टि के पहले विश्व का अस्तित्व नहीं रहता। ईश्वर को सृष्टि करने की इच्छा होती है और तुरन्त सृष्टि हो जाती है। चूँकि ईश्वर ने विश्व के पदार्थों की रचना की है, इसलिए पदार्थों में जो भेद है, वह पारमार्थिक है। यह भेद कभी नष्ट होने वाला नहीं है। मनुष्य न घोड़ा हो सकता है और न घोड़ा मनुष्य। सृष्टिवाद के अनुसार विश्व में परिवर्तन नहीं होता, क्योंकि परिवर्तन तो मिथ्या है।

सृष्टिवाद की सामान्य विशेषताएँ :→ इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ हैं —

(1)- यह ईश्वरवादी है। यह ईश्वर की सत्ता में विश्वास करता है। यदि ईश्वर को न माना जाए तो फिर सृष्टि कौन करेगा? अतः ईश्वर ही सृष्टिकर्ता है।

(2)- विश्व अपरिवर्तनशील है। जिस रूप में विश्व की रचना हुयी थी उसी रूप में यह सदैव रहता है। इसके अनुसार परिवर्तन वास्तविक नहीं, बल्कि मिथ्या है।

(3). विश्व की रचना एकाएक हुई है। ईश्वर सर्वशक्तिमान है। उसकी इच्छा मात्र होते ही विश्व की सृष्टि हो जाती है। इस कार्य में जरा भी विलंब नहीं होता। क्षणभर में ही विश्व उसकी इच्छानुसार निर्मित हो जाता है।

(4)- विश्व के विभिन्न पदार्थों में भेद आरम्भ से ही है। यह भेद पारमार्थिक है। विभिन्न जातियों में अंतर सदैव बना रहेगा। एक जाति दूसरी जाति में परिणत नहीं हो सकती। बंदर मनुष्य नहीं हो सकता और न मनुष्य बंदर हो सकता है।

सृष्टिवाद के विभिन्न रूप :→

ईश्वर ने विश्व की सृष्टि की है, यह तो सृष्टिवाद की सामान्य मान्यता है। परन्तु यहाँ प्रश्न उठता है कि ईश्वर ने किस उपादान से विश्व की रचना की है। अतः इस प्रश्न को लेकर सृष्टिवाद के तीन रूप हो जाते हैं —

(1) प्रथम मतानुसार, ईश्वर शून्य से विश्व की सृष्टि करता है। यह मत आगस्टीन आदि विचारकों का है। इसके अनुसार, ईश्वर ही एकमात्र परमार्थ सत्ता है क्योंकि इसके अतिरिक्त कोई अन्य सत्ता सृष्टि के पूर्व नहीं था। यदि सृष्टि के पूर्व ईश्वर के अतिरिक्त किसी अन्य सत्ता को स्वीकार किया जाएगा, तो ईश्वर उससे सीमित हो जायेगा। सीमित ईश्वर विश्व की रचना करने में समर्थ नहीं हो सकता। इसलिए ईश्वर ने अपनी इच्छामात्र से बिना किसी बाह्य उपादान के सिर्फ शून्य से ही विश्व की सृष्टि की है। ईश्वर विश्व का केवल निमित्त कारण है।

(2)- दूसरे मत के अनुसार, ईश्वर विश्व का केवल निमित्तकारण है और उपादानकारण कुछ और है। यहाँ पर, उपादान कारण जड़ या भूत है। इसी जड़ या भूत से ईश्वर विश्व की सृष्टि करता है। शून्य से किसी पदार्थ की उत्पत्ति नहीं हो सकती। इसलिए, इस मत के अनुसार, ईश्वर शून्य से नहीं बल्कि जड़ से विश्व का निर्माण करता है। सृष्टि के पूर्व ईश्वर के अतिरिक्त सिर्फ जड़ या भूत का अस्तित्व रहता है। जिस प्रकार कुम्हार मिट्टी से भिन्न-भिन्न प्रकार के बरतन बनाता है, उसी प्रकार ईश्वर भूत से विश्व के विभिन्न पदार्थों को उत्पन्न करता है। इस मत के समर्थक, प्लेटो, ईसाई धर्म, प्राचीन ग्रंथ, एवं वैशेषिक दार्शनिक हैं। प्लेटो ईश्वर को निमित्तकारण और जड़ को उपादानकारण मानते हैं। वैशेषिकों ने भी ईश्वर के अतिरिक्त परमाणुओं को परमार्थ माना है। इन्हीं परमाणुओं को विभिन्न प्रकार से सजाकर ईश्वर विश्व के विभिन्न पदार्थों का निर्माण करता है।

(3): तीसरे मत का समर्थन भारतीय विचारक रामानुजाचार्य जी के दर्शन में मिलता है। इस मत में उपर्युक्त दोनों मतों का समन्वय किया गया है। इसके अनुसार विश्व का एकमात्र कारण ईश्वर है। वह शून्य से विश्व की रचना नहीं करता। ईश्वर के अन्दर ही चित् और अचित् पाए जाते हैं। इन दोनों तत्वों से वह विश्व का निर्माण करता है। यहाँ ईश्वर की तुलना उस मकड़ी से की जा सकती है जो स्वयं अपने अन्दर से सामग्री प्रस्तुत करके जाल बुन लेती है। इस प्रकार रामानुजाचार्य के अनुसार ईश्वर ही विश्व का निमित्तकारण और उपादान कारण दोनों है।

सृष्टिवाद की आलोचना :- सृष्टिवाद को आज आदर की दृष्टि से नहीं देखा जाता। क्योंकि आधुनिक युग में वैज्ञानिक अनुसंधानों ने सृष्टिवाद को अग्राह्य सिद्ध करके विकासवाद को उचित सिद्धांत बताया है। कुछ धार्मिक व्यक्तियों को छोड़कर आज इसका समर्थन करने वाला कोई नहीं है। परन्तु भारतीय आस्तिक दर्शनों में इसकी व्याख्या हमें मिलती है। चूँकि वहाँ पर ईश्वर एवं वेद को स्वीकार किया गया है अतः उस दृष्टिकोण से सृष्टि की विवेचना ईश्वर द्वारा रचित कहकर बतायी गई है। फर्क सिर्फ इतना है कि किसी ने भूत या जड़ के द्वारा की है तो किसी ने उसे निमित्त कारण कहा है। इस प्रकार से यह सिद्धांत बहुत ही प्राचीन और आलोचनात्मक विषय बन कर रह गया है।